

02/4/84

पतावली पेस डुर्र । आधि. प्राप्ति मत्र प्राप्तिगण अनुपास्वित ।
रुक्-रुक् लीन बार आवापे फिलनारि वरि । सप्तम सोम
5 Pm हो युक्त हैं । अतः प्राप्तिगण मत्र आधि. प्राप्ति के
अनुपास्वित रहने पर प्राप्तिगण का प्राप्ति-पत्र अदम्य दलदी
अदम्य पेशी में स्वयं किरा जाता है । पतावली में सल सुगत
होकर मन्वर से मत्र हो ।

निर्णय कृतले इपलास सुगमा वाप्रा ।

